thearyasamaj.org

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघनतो अरावणः॥

आर्य संकल्प

(बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष-38 जनवरी अंक-1

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-4 (बिहार)

thearyasamaj.org

सम्पादक
रमेन्द्र कुमार गुप्ता
मो. 9334184136

सह सम्पादक
संजय सत्यार्थी
मो. 9006166168
प्रेम कुमार आर्य
मो. 9570913817

सम्पादक मंडल
पं० व्यासनन्दन शास्त्री
श्री बिन्देश्वरी शर्मा
मो. 8544088138

संरक्षक
गंगा प्रसाद
सभा प्रधान

कोषाध्यक्ष
सत्यदेव गुप्ता
स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री मुनीश्वरानन्द भवन
नयाटोला, पटना-800 004
दूरभाष : 07488199737
E-mail_arya.sankalp3@gmail.com
सदस्यता शुल्क
एक प्रति : 15/-
वार्षिक : 120/-

मुद्रक :
जय उमा प्रिन्टर्स
मो. 9430246879

संपादकीय

वेदों के उपदेश से ही मानव का कल्याण संभव

मनुष्य मात्र के लिये वेद उपदेश देता है कि वह विचार पूर्वक अपने और संसार के कल्याण के मार्ग पर चले। आज जो लोग हिन्दु, मुसलमान, ईसाइ बनने की बात करते हैं, उन्हे वेद पढ़ने की आवश्यकता है, क्योंकि वेद कहता है मर्नुभव: अर्थात मनुष्य बनो! महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लघु ग्रंथ स्वमंन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में मनुष्य की चर्चा करते हुए लिखा है कि " मनुष्य को सबसे यथायोग्य स्वात्मवत् सुख-दु:ख, हानि-लाभ में वर्त्तना श्रेष्ठ, अन्यथा वर्त्तना बुरा समझता हुँ।" ऋषि ने स्पष्ट कहा है कि "मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दु:ख और हानि-लाभ को समझें।

इसका अर्थ यही हुआ कि जो व्यक्ति मन-वचन और कर्म से पवित्र है, ईश्वर की आज्ञा का पालन करने वाला है वही श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात आर्य पुरूष कहलाने योग्य है, चूकि आर्य ईश्वर के पुत्र को कहते हैं और पुत्र वही कहलाता है जो पिता के श्रेष्ठ विचारों का अनुव्रती होकर प्राणी मात्र के हित का ध्यान रखता है। आगे ऋग्वेद 4.26.2 कहता है- 'अहं भूमिमददम् अर्याय अर्थात मैं यह भूमि आर्यों को देता हुँ। ईश्वर आर्यों को यह भूमि इस लिये देना चाहता है कि वह जीव मात्र के सुख-दु:ख को अपना सुख-दु:ख समझकर व्यवहार करें।

जब मनुष्य दूसरे के सुख-दु:ख को अपना सुख-दु:ख समझने लगेंगे तो हिन्दु, मुस्लमान, ईसाई आदि बनने-बनाने की बात ही नहीं उठता। केवल और केवल मनुष्य बनने से ही इस प्रकार के सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान निकल जायेगा। आर्यों की उदात आदर्श वादिता को ध्यान में रख कर ही वेद ने कहा- "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" संसार को आर्य बनाओ! इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर:- इन्द्रगुण विशिष्ट व्यक्तियों का संरक्षण करो, उनको बढ़ाओ! अपधन्न तो अरावण:- पापियों का नाश करो। अत: संसार में शांति साम्राज्य के लिये आर्यों की बृद्धि और दस्युओं का विनाश होना ही चाहिये।

जब तब संसार वैदिक शिक्षाओं को अपन आचरण में लाकर आर्य अर्थात श्रेष्ठ मानव नहीं बनता और वेदों के उपदेश को ग्रहन नहीं करता, तब-तब संसार में ईर्ष्या, द्वेष, अशांति और क्षोभ का वातावरण दूर करना असम्भव है।

अत: आओ लौट चलें वेदों की ओर

पं० संजय सत्यार्थी

thearyasamaj.org

आर्य संकल्प

-: सूची :-

क्रम	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	
2.	वेद मंत्र	1
3.	वेद प्रार्थना	2
4.	अंधविश्वास-निर्मूलन	4
5.	शिक्षा के अनिवार्य घटक	10
6.	आर्य ईश्वर की उपासना	13
7.	अंग्रेजी शासन की गुलामी	16
8.	विश्व संगठन	25
9.	उत्तम चरित्र	28
10.	समाचार	31

इस पत्रिका में दिये गये लेख लेखकों के अपने विचार हैं, इससे सम्पादक का कोई सम्बन्ध नहीं है ।

जनवरी

कल्याणकारी मार्ग पर ही चलें

स्वास्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि।।
(ऋग्वेद 5/51/15)

पदार्थ– हे परमेश्वर! आपकी कृपा से हम (सूर्य-चन्द्रमसौ इव) सूर्य-चन्द्रमा के समान (स्वस्ति) कल्याणकारी (पन्थाम्) भागों के (अनु, चरेम) अनुगामी हों और हम (जानता) ज्ञानी-विद्वानों के साथ (पुनः) वार (सं गमेमहि) सत्सङ.ति करें ।।

भावार्थ– सब मनुष्यों को सूर्य के प्रकाश, ऊष्मा, ऊर्जा और नियमबद्धता तथा चन्द्रमा के प्रकाश, शीतलता एवं नियमबद्धता, आदि गुणों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये तथा सदैव दानी, अहिंसक और विद्वानों की ही संगति करनी चाहिये; कृपण, हिंसक और मूर्खों की नहीं।

काव्यरूपान्तरण–

सूर्य चन्द्र की भाँति जगत् में,
सखु-पथ के अनुगामी हों।
ज्ञान और निज शुभ कर्मों से,
सुख पावें जग-नामी हों ॥1॥
दानी रक्षक विद्वानों का,
साथ सदा जग में पावें।
हे परमेश्वर ! इस जीवन में,
शुभ कर्मों के पथ जावें ॥2॥

डॉ. वेद प्रकाश, मेरठ

thearyasamaj.org

वेद प्रार्थना

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य, रोजड़ गुजरात

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥

यजुर्वेद 19/9

शब्दार्थ- तेज : असि - हे परमेश्वर! आप तेज स्वरूप हैं, **तेज : मयि धेहि**- मुझे भी तेजस्वी बनाओ। **वीर्यम् असि** - आप वीर्यवान् हैं, **वीर्यम् मयि धेहि** -मुझे भी वीर्यवान् बनाओ। **बलम् असि**- आप महाबली हैं, **बलम् मयि धेहि** - मुझे भी बलवान् बनाओ। **ओजः असि** - आप ओजस्वी हैं, **ओजः मयि धेहि**- मुझे भी ओजस्वी बनाओ। **मन्युः असि** - आप दोषों पर क्रोध करने वालें हैं मन्युम् मयि धेहि- मुझे भी दोषों पर क्रोध करने वाला बनाओ। **सहः असि**- आप सहनशील हैं, **सहोः मयि धेहि** - मुझे भी सहनशील बनाओ।

भावार्थ- प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में पदे-पदे धन, रूप, प्रतिष्ठा, सम्मान से सम्बन्धित प्रलोभन उपस्थित होते ही रहते हैं। सामान्य व्यक्ति ऐसे अवसरों पर धर्म, नीति-नियम, विधि-विधान, व्रत-संकल्प, अनुशासन के आदर्शों से च्युत होकर देर सवेर पतन को प्राप्त हो ही जाता हैं विरले व्यक्ति ही ऐसी परिस्थितियों में अडिग होकर, बिना घबराये सन्मार्ग पर डटे रहते हैं चाहे उनकी कितनी ही हानि क्यों न हो, प्राण भी क्यों न चले जाएं। ऐसे ही व्यक्ति तेजस्वी होते हैं और यह तेज परमपिता परमात्मा से ही, उसकी उपासना करने से उपलब्ध होता है और कोई साधन या उपाय नहीं है।

शास्त्रकारों ने शरीर में सर्वोत्कृष्ट और मूल्यवान् पदार्थ वीर्य को माना है। जो निर्वीर्य या हीनवीर्य या अल्प वीर्यवान् होता है वह रोगी, विकृत, भद्दा, कुरूप, अशक्त, निराश होता है। ऐसी व्यक्ति के द्वारा सर्वकल्याणार्थ, परोपकारी, सार्वजनिक विशिष्ट कार्यों को करने की बात दूर रही अपितु वह अपने जीवन का भी ठीक पालन-पोषण नहीं कर सकता है। इसके विपरीत ऊर्ध्वरेता-वीर्यवान् व्यक्ति शारीरिक दृष्टिकोण से हर प्रकार से समर्थ होने के कारण सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि प्रतिकूलताओं को सहन करके भी अपनी सभी योजनाओं को, लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है।

हर प्रकार के शारीरिक बल से युक्त होने पर भी अनेक बार भयंकर विरोध, आपत्ति, बाधा के उपस्थित हो जाने पर व्यक्ति किकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है, अपनी सर्वस्व हानि, अपकीर्ति अथवा मृत्यु आदि के भय से

thearyasamaj.org

घबराकर सत्य, धर्म, न्याय के पथ को त्याग देता है। इसके विपरीत आत्मीय बल वाला व्यक्ति पहाड़ के समान दुःख उपस्थित हो जाने पर भी घबराता नहीं है। अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ता ही रहता है, बाधायें, कष्ट, उसके उत्साह को कम नहीं करते हैं, पराक्रम को नष्ट नहीं करते हैं, बल्कि वह अधिक साहस के साथ आगे चलता रहता है।

मनुष्य को बचपन से यह सिखाया जाता है कि झूठ, छल, कपट, चोरी, क्रोध आदि बुराई है, अधर्म है, पाप है। इनसे हमेशा बचना चाहिए क्योंकि इन बुराइयों से ग्रस्त होकर मनुष्य विविध दुःखों को भोगता है। किन्तु सामान्य मनुष्य में इन बुराईयों को रोकने, इनका सामना करने का साहस नहीं होता है। बल्कि इन पाप कार्यों में लिप्त होकर अमूल्य जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।

कुछ व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में तो ऐसी बुराईयों को नहीं आने देते किन्तु पारिवारिक, सामाजिक क्षेत्र में विद्यमान बुराईयों को सहन करते रहते हैं। उनका विरोध नहीं करते हैं। उन बुराईयों को परिवार, समाज, राष्ट्र में से दूर करने के लिए तन, मन, धन, समय, बुद्धि किसी का भी विनियोग नहीं करते हैं। ऐसे मनुष्यों का समाज कभी भी उत्कृष्ट नहीं बन सकता है।

सहनशक्ति, धैर्य का अभाव मनुष्य को शीघ्र ही परास्त कर देता है। कठिनाई, बाधाये, और प्रतिकूलताएं व्यक्ति के साथ जुड़े हुए हैं। जो इनके सामने आने पर इनको सहन न करके घबरा जाता है, घुटने टेक देता है, वह निराश-हताश होकर दुःखी हो जाता है। अतः जीवन में सफल होने के लिए सहनशक्ति एक विशेष गुण है, इसके बिना व्यक्ति जीवन यात्रा के बीच में ही असफल हो जाता है, बल्कि वह सामान्य छोटे-छोटे कार्यों में भी सफल नहीं हो पाता है।

उपर्युक्त सभी गुण परमपिता परमात्मा के उपासक को मिलते हैं। ईश्वर ये सभी अत्यावश्यक गुण उसके जीवन में अनायास ही भर देता है और वह हर प्रतिकूलता का सामना करके हर क्षेत्र में सफल हो जाता है। हे प्रभो! हमें भी तेजस्वी, वीर्यवान्, बलवान्, ओजस्वी, मन्युयुक्त और सहनशील बनाईये। हम गद् गद् होकर आपसे प्रार्थना कर रहे हैं कि हममें इन गुणों की कमी है। हम आपकी सहायता से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होना चाहते हैं।

मेरा प्रणाम हो उस महान् गुरू दयानन्द को जिनकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिनके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगो को पदीप्त किया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

thearyasamaj.org

अंधविश्वास-निर्मूलन

पिछले अंक का शेष.... लेखक- मदन रहेजा, मुम्बई

अंधविश्वास : 31 : नामस्मरण से मनुष्य के सब पाप धुल जाते हैं और वह भवसागर से पार होकर मुक्त हो जाता है।

निर्मूलन : भवसागर से पार होना या मुक्ति को प्राप्त करना इतना सरल नहीं है। उसके लिए साधना करनी पड़ती है। जो-जो कर्म किये हैं उनका फल तो अवश्य भुगतना ही पड़ता है। कर्मफल भुगते बिना पाप धुल नहीं सकते। नाम-स्मरण से केवल नाम-स्मरण होता है अगर नाम-स्मरण की विधि सही है तो प्रभु में ध्यान लगने लगता है और ध्यान-से ही ज्ञान में वृद्धि होती है। जब तक मनुष्य अपने आचार-विचार को शुद्ध-पवित्र नहीं करता तब तक संसार के भवसागर से पार नहीं हो सकता।

नाम स्मरण की सही विधि यही है कि ईश्वर के जिस नाम को जपा जा रहा है उसके अर्थ को भी ध्यान में रखा जाए। ईश्वर का नाम (गुण) 'न्यायकारी' है, किन्तु केवल न्यायकारी नाम जपने से कोई भला होनेवाला नहीं है जब तक कि स्वयं भी उस गुण को अपने जीवन में धारण नहीं कर लेते । ईश्वर का नाम 'शुक्र' है अर्थात् वह पवित्र है, इसका अर्थ यह है कि उस गुण को अपने जीवन में उतारें, स्वयं पवित्र बनें। मन-वचन-कर्म में पवित्रता लाएँ, तभी कह सकते हैं कि शुक्र का स्मरण-जाप करना सफल हुआ। इस प्रकार नाम-स्मरण से जीवन में परिवर्तन आता है। केवल नाम जपते रहें और कर्म इसके विरुद्ध करें तो यह नाम-स्मरण का ढोंग है- दिखावा है। आँखें बंद करके बैठना-नाम-स्मरण के स्थान पर और कुछ सोचना-यह तो प्रभु-स्मरण नहीं है।

भवसागर से पार होना है- मुक्त होना है तो अपने को सरल बनाते जाओ। संसार की वस्तुओं में फँसे मत रहो! जितना आवश्यक है उतने ही साधनों का उपयोग करो। त्याग-भाव से वस्तुओं का उपभोग करो। बाहर की दुनिया से मुँह मोड़ो और आन्तरिक देश में प्रवेश करने का प्रयास करते रहो। मन के द्वार खोलो। आध्यात्मिक उन्नति करते रहो- योग के अष्टांगों पर चलते रहो-यही एक सच्चा मार्ग है जिस पर चलकर भवसागर से पार हो सकते हैं- जीवन-स्मरण के बन्धन से छूट सकते हैं और परमसुख की प्राप्ति कर परमानन्द में स्वेच्छा से विचार सकते हैं और परमसुख की प्राप्ति कर परमानन्द में स्वेच्छा से विचार सकते हैं।

अंधविश्वास : 32 : मरते समय जो जैसी भावना रखता है वैसा ही जन्म पाता है।

thearyasamaj.org

निर्मूलन : क्या मरते समय अगर मरनेवाला व्यक्ति परमात्मा को याद करता है तो वह परमात्मा को प्राप्त करता है? मरते समय कृष्ण भगवान को याद करे तो वह क्या कृष्ण भगवान से मिल जाएगा? या कोई अपने गुरुजनों को याद करे तो वह गुरु की शरण में जाएगा? के सब भ्रान्तियाँ है; वास्तविकता कुछ और है।

अब कुछ प्रश्न हम करते हैं- विद्वज्जन इस पर विचारें-

(1) पूरी उम्र कुकर्म किये और अन्तिम समय भगवान का नाम लिया- तो वह व्यक्ति कैसे सद्गति प्राप्त करेगा?

(2) सारी उम्र निष्काम कर्म करते रहो और अंतिम वेला में कोई अपने पुत्रों को स्मरण करता है- अब उसकी स्थिति मृत्यु के पश्चात् क्या होगी?

(3) साधारण जीवन बिताया- न किसी से वैर न किसी से लगाव- कर्म करते-करते प्रभु को प्यारा हो गया- इसका क्या होगा?

(4) जीवन-भर अपने ही शरीर की सेवा की, स्वार्थ में ही लगा रहा- अन्त में स्त्री की ओर ही ध्यान रहा- तो ऐसे व्यक्ति का क्या परिणाम होगा?

इस प्रकार के अनेक भ्रम हैं, परन्तु उनका उच्छेदन कैसे होगा? ईश्वर सर्वज्ञ है- सर्वान्तर्यामी है- सबके साथ अंग-संग रहता है- उससे कोई बात छुपी नहीं है।

मरनेवाला व्यक्ति कौन हैं-कैसा है-उसके कर्म क्या हैं- उसका अतीत क्या हैं- यह केवल परमात्मा ही जानता है। उसी के पास कर्मों का पूरा लेखा-जोखा है। अन्त-समय में व्यक्ति कुछ भी सोचे-करे-सब कर्मों के आधीन आ जाता है। प्राण निकलने के तुरन्त पश्चात् ही परमात्मा उस दिवंगत आत्मा की स्थिति का निर्णय करता है और अगला जन्म कहाँ-कैसे-कब देना है यह उसी सर्वेश्वर का विषय है।

हाँ, इतना अवश्य है कि मरने के समय अगर व्यक्ति प्रभुनाम- स्मरण करता है तो ईश्वर की असीम अनुकम्पा से उसके प्राण निकलने में कठिनाई कम हो जाती है। अंत-समय की घड़ियाँ अवश्य ही कुछ मायने रखती हैं यही कारण है कि घर के सदस्य उस समय भजन या सत्संग की बातें करते हैं या कोई बाणी की कैसेट बजाते हैं या गीता का पाठ करते हैं कि जाते समय दिवंगतात्मा कुछ तो अच्छाई ग्रहण करके विदा होवे। हरेक लक्षण के कर्मों का फल जीवात्मा के संस्कारों को संस्कृत करता रहता है। पलभर में महात्मा बन सकता है- यह आत्मशक्ति पर निर्भर करता है। परमात्मा सर्वज्ञ है, उसी पर छोड़ते हैं कि वह दिवंगतात्मा को कहाँ भेजता है।

thearyasamaj.org

अंधविश्वास : 33 : किसी भी जीव की हत्या करना पाप है, किन्तु मच्छर-मक्खी-कीड़े इत्यादि को मारने में कोई पाप नहीं होता।

निर्मूलनः हत्या करना पाप है-बिल्कुल ठीक है, परन्तु जो दुष्कर्म करता है और जो मनुष्य-जाति के लिए हानिकारक है उसे सरकार भी फाँसी की सजा सुनाती है।

मच्छर-मक्खी को घर में आने से रोका जा सकता है, उसमें कोई पाप नहीं है। परन्तु जो मच्छर-जीव-जन्तु-कीड़े हानि पहुँचाते हैं उनको खत्म करना या मारना उचित है, क्योंकि मनुष्य-योनि सर्वश्रेष्ठ योनि है, इसकी रक्षा करना मनुष्य का परमकर्त्तव्य है। जिससे मनुष्य को अपनी जान का खतरा है, उसे मार डालने में कोई आपत्ति नहीं है। मनुष्य भी अगर मनुष्य-जाति के लिए घातक है तो उसे भी मार डालने में पाप नहीं है। महाभारत का युद्ध इसका प्रमाण है और श्रीकृष्ण भगवान ने भी अर्जुन को समझाते हुए (संसार को बताया है) कहा है कि जो भी अधर्मी हैं उनके शरीर को नष्ट करना ही धर्म है, क्योंकि शरीर से ही धर्माधर्म के कार्य होते हैं-आत्मा कभी नहीं मरता। कौरवों को मारने में पांडवों का साथ श्रीकृष्ण ने इसी कारण दिया था कि कौरव अधर्म का कार्य करते जा रहे थे। उनको रोकने के लिए ही पांडवों को छूट दी गई थी कि युद्ध के द्वारा कौरवों को खत्म किया जाए। असुरों को मारने में कोई पाप नहीं है- यह तो पुण्यकर्म है। दुश्मन को मारने में ही पुण्य हैं, वरना दुश्मन के हाथों स्वयं की जान को गँवाना कहाँ की समझदारी है?

वैसे जीव-जन्तु-कीड़े इत्यादि (साँप-बिच्छू-शेर इत्यादि जंगली जानवर) भी ईश्वर के बनाए हुए हैं और इनको हमें मारने का कोई अधिकार नहीं बनता, परन्तु जब ये जीव मनुष्य को हानि पहुँचाते हैं तो इनका सफाया करना ही पड़ता है, इसको आपातधर्म भी कहते हैं अर्थात् ये धर्म के विरुद्ध तो है, परन्तु इसके अलावा कोई चारा भी नहीं है।

घर में पीपट (तोते) आते हैं तो हम उनको तो बड़े प्यार से देखते हैं। उनको छूने की कोशिश भी करते हैं। उन्हें मारने का तनिक भी विचार नहीं आता, क्योंकि उनसे हमें कोई हानि नहीं होती। चिड़िया-कबूतर इत्यादि पक्षी घर में आते हैं। उनको हम मारते नहीं, भगा देते हैं कि कहीं घर में यहाँ-वहाँ नुकसान न करें- इनकी हत्या करने की भावना कभी उत्पन्न नहीं होती। अतः जिससे मनुष्य-जाति की कोई हानि नहीं, न जीवों को मारना पाप है, जैसे-कुत्ते, घोड़ें, बकरी, गाय, भौंस इत्यादि। शेर जगंलों में रहता

thearyasamaj.org

है परन्तु अगर वह शहरों की ओर आ जावे और नरसंहार करना शुरू कर दे तो उसे मार डालने में ही भलाई है।

जो जीव हमें (मनुष्य-जाति को) नहीं सताते, हमको भी चाहिए उनको न मारें, अपितु उनसे प्रेम करें- उनकी कभी हत्या नहीं करें। पशु-पक्षी हमारी ही तो सेवा करते हैं। कीड़े-मकोड़े खा जाते हैं, गंदगी को साफ करते हैं। मछली पानी में रहकर पानी को साफ करती है, अतः किसी भी पानी के प्राणी को मारना नहीं चाहिए।

गाय सभी जानवरों का प्रतिनिधि है, अतः गाय को मारना तो भयंकर पाप है। वेद में कहा गया है (ईश्वर का आदेश है) कि 'गाय को मत मारो', इसका यह अर्थ नहीं कि बाकी सबको मारो। गाय में सब अहिंसक पशुओं की गणना करें, क्योंकि गाय सब पालतू जानवरों की प्रतिनिधि है। जितना हो सके मक्खी-मच्छर इत्यादि जीवों की हत्या न करके, घरों में उनके प्रवेश पर रोक लगा दें। व्यर्थ की हत्या छोड़कर इनसे बचने के उपाय करने चाहियें।

अंधविश्वास : 34 : कहते हैं कि मरे हुए लोगों के कपड़े नहीं पहनने चाहिएँ- उनको दान में दे देना चाहिए।

निर्मूलन : क्यों नहीं पहनना चाहिए? कपड़े तो कपड़े ही होते हैं; किसी को दान देंगे तो वह भी तो पहनेगा ही? पहननेवाला नहीं रहा और कपड़े साफ-सुथरे व नये हैं तो उनके पहनने से हानि भी क्या है? हाँ, अगर मरनेवाला व्यक्ति इतना बुरा था कि उसके कपड़ों से भी नफरत है तो अवश्य नहीं पहनने चाहिएँ, अथवा उसे कोई छूत का रोग था तो उस स्थिति में उसके कपड़े नहीं पहनने चाहियें।

जब तक कोई जीवित होता है उससे सभी प्रेम करते हैं, मरते ही उसका पार्थिव शरीर रह जाता है। शव को तो जला दिया जाता है, शेष रहे उसके कपड़े-गहने-जूते और घर का दूसरा सामान इत्यादि। दिवंगतात्मा के कपड़े तो चलो दान में दे दें तो ठीक है, परन्तु दूसरे शेष सामान को भी कभी दान में देते है? गहने तो सँभालकर रखे जाते हैं और बैंक-बैलेंस तो काम आता ही है। घर का सामान कोई भी उठाकर बाहर नहीं फैंकता।

ये सब भ्रम हैं, इनका तर्क से कोई तालमेल नहीं है। नये कपड़े बिना सिले तो कोई नहीं दे देता। जो कपड़े पुराने होते हैं केवल दिखावे के लिए-सबके सामने या किसी रिश्तेदार के सामने दान में किसी को दे देते हैं, परन्तु कीमती चीजें तो लॉकरों में बैंकों में जमा रहती हैं। यदि कपड़े पहनने के योग्य हैं तो

thearyasamaj.org

अवश्य ही अपने घर में दूसरे सदस्य पहन सकते हैं, इसमें कोई बुराई नहीं है- कोई आफत आनेवाली नहीं है। हाँ, अगर मरनेवाले की इच्छा थी कि अमुक-अमुक वस्तुएँ अमुक-अमुक व्यक्तियों को उसके मरने के पश्चात् दे दी जाएँ और अगर वैसा नहीं किया गया अर्थात् उसकी Will (वसीयत) के अनुसार नहीं किया गया तो यह बेईमानी है। मरनेवाले के सामान को आपस में ही हड़प लेना- उसकी इच्छानुसार न करना सरासर धोखा है। ऐसा धन या वस्तुएँ फलती नहीं हैं। घर में अशान्ति ला सकती है। घर में ही झगड़े का कारण बन सकती हैं।

पराए धन को हड़पना या हथिया लेना पाप है- अधर्म है। इसका हिसाब देना ही पड़ेगा। कोई देखे या न देखे, जाने या न जाने, वह (ईश्वर) सब-कुछ जानता है, देख रहा है। इसका परिणाम भुगतना ही पड़ेगा।

अंधविश्वास : 35 : जिस घर में मृत्यु होती है उस घर में 12 दिनों तक पूजा-पाठ नहीं किया जाता- संध्या-हवन भी नहीं करना चाहिए- ज्योत नहीं जलानी चाहिए।

निर्मूलन : ये सब वहम हैं, भ्रान्तियाँ हैं। 12 दिनों की तो बात बहुत दूर हैं, उस घर में तो रोजाना पूजापाठ करना चाहिए, रोज़ दो समय यज्ञ होना चाहिए। जिस घर में किसी की मृत्यु होती है उस घर के वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन तो अवश्य ही करना चाहिए। जिस कमरे में मृत्यु होती है उस कमरे को साबुन-पानी से अच्छी तरह साफ करना चाहिए- कीटनाशक दवा से साफ करना चाहिए। शुद्ध घी की ज्योत जलानी चाहिए क्योंकि घी जलने से कीटाणु नष्ट होते हैं और वातावरण पवित्र होता है। धूप-अगरबत्ती जलाने से दुर्गन्ध नष्ट होती है- धुएँ से कीट-पतंग भाग जाते हैं। हवन तो सर्वश्रेष्ठ सर्वोत्तम कर्म है, क्योंकि हवन-सामग्री जलने से दूर-दूर तक का वातावरण शुद्ध और सुगंधित होता है। 12 दिन क्या, हमेशा करना चाहिए। पूजा-पाठ तो पवित्र कर्म है, नहीं करेंगे तो अपनी ही हानि है। नियमपूर्वक संध्या करनी चाहिए। ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना में किसी भी हाल में नागा नहीं करना चाहिए। मृत्यु के वातावरण में तो अवश्य करना चाहिए। इससे मन को शान्ति मिलती है- धैर्य प्राप्त होता है- आत्मिक बल मिलता है, जिससे दिवंगतात्मा के बिछड़ने का दुःख कम होता है।

हाँ, इन बार दिनों में ब्रह्मचर्य का दृढ़ता से पालन करना चाहिए, गर्भाधान नहीं करना चाहिए। पुण्य के काम नित्य करने चाहिएँ अर्थात् दान-पुण्य अवश्य करना चाहिए जिससे

thearyasamaj.org

घरवालों के ही सुसंस्कार बनते है।

याद रहे, कर्ता को ही कर्मफल मिलता है। दिवंगतात्मा के लिए कुछ भी नहीं किया जा सकता। जो जलकर भस्म हो गया, उसके नाम पर पुण्यकर्म करने-दान-दक्षिणा देने से मरनेवाले को कोई लाभ नहीं होता। जो कर्त्ता है उसी को उसका फल मिलता है।

प्रमाण के रूप में

यज्ञकर्ता को सभी सुख प्राप्त होते हैं-

1. तस्येदर्वन्तो...न मर्त्यकृतं नशत् ।

ऋग्वेद 8/19/6

2. यस्य कुर्मो...ब्रद्धणस्पतिः।

यजु: 17/52

3. उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते...च वर्धय।

अथर्व॰ 19/63/1

4. तस्मात् सर्वगतं...प्रतिष्ठितम्।

गीता 3/15

अंधविश्वास : 36 : भूत-प्रेत-राक्षस-डायन -असुर- ये सब होते हैं। इनसे छुटकारा नहीं हो सकता।

निर्मूलन : ये सब डरावनी बातें हैं जिनका प्रभाव कमजोर व्यक्तियों पर अज्ञानता के कारण पड़ता है। संक्षेप से समझ लें-

भूत- गुज़रे हुए काल को भूत कहते हैं।

प्रेत- मृत शरीर को प्रेत कहते हैं।

राक्षस- यह काल्पनिक शब्द है। सभी पापकर्मी 'राक्षस' कहलाते हैं।

हिंसक और अधर्मी वृत्तियों को राक्षसी वृत्ति कहते हैं। राक्षस उस जाति को जानें जो सदा नीच कर्म करते हैं। डायन- यह भी राक्षस की तरह एक काल्पनिक शब्द ही है। यह स्त्रीलिंगवाची शब्द है। राक्षस की पत्नी को भी लोग डायन कहते हैं।

बड़े बालोंवाला- भयानक शक्लवाला- बड़े दाँतोंवाला- खून पीने वाला-चार हाथोंवाला- दस सरवाला, चीरफाड़ के मनुष्य को कच्चा खा जानेवाला- अँधेरे में पीछे से पकड़नेवाला- ये सब डर के कारण पैदा हुई भ्रान्तियाँ हैं जो लोगों से सुनी-सुनाई बातों पर ध्यान देने से मन में घर कर लेती हैं। वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं होता। इनसे छुटकारा पाने का- इस वहम का आसान इलाज है- प्रभु- नाम का स्मरण। प्रभु के नाम में बहुत शक्ति है। नाम के अर्थ को ध्यान में रखकर उसको आचरण में लाना- यही नाम की शक्ति है। वैदिक साहित्य का स्वाध्याय, एवं धार्मिक पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान की प्राप्ति होती है- अज्ञानता का पर्दा हट जाता है, इसी से अंधश्रद्धा और अन्धविश्वास का निवारण होता है।

शेष अगले अंक में...

thearyasamaj.org

शिक्षा के अनिवार्य घटक

डॉ. प्रमोद योगार्थी, हरियाणा

सन्तान को जन्म देना और उसका निर्माण करना दोनों अलग-अगल बातें हैं। याद रहे यदि निर्माण नहीं किया गया तो बालक को पैदा करना अर्थहीन हो जायेगा। अर्थहीन ही नहीं अपितु परिवार समाज और राष्ट्र के लिए विनाशकारी भी हो सकता है। चोर, डाकू, लुटेरा, आवारा, बदमाश, आतंकी, राक्षस, हैवान न जाने कहां तक गिर सकता है इसकी कोई सीमा नहीं है। अतः पैदा करने से ज्यादा जरूरी है बालक-बालिका का निर्माण करना। उन्हें उत्तम शिक्षा और संस्कार देना।

यद्यपि सन्तान निर्माण में बालक के पूर्व जन्म के संस्कार, परिवार व समाज का वातावरण, देश काल के हालात, मित्रों की संगति, राज व्यवस्थाएं, नियम कानून आदि के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता परन्तु माता-पिता और पढ़ाने वाले आचार्य की भूमिका सर्वोपरि है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का मानना है कि वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् है जिसके माता पिता और आचार्य तीनों धार्मिक और विद्वान् होते हैं। इनमें भी जितना माता से सन्तानों को उपदेश और परोपकार पहुंचता है उतना अन्य किसी से नहीं। माता सब गुरूओं में परम गुरू है। मां को चाहिए कि वह गर्भ से लेकर पैदा होने तथा विद्या प्राप्ति पर्यन्त सन्तान को सुसंस्कारों की शिक्षा देती रहे। मां मदालसा, अभिमन्यु की मां सुभद्रा, शिवाजी की मां जीजाबाई आदि अनेक विदुषी माताओं का उदाहरण हमारे सम्मुख है। याद रहे गर्भ में स्थित बालक पर मां की प्रत्येक चेष्टा, क्रिया, विचार चिन्तन का स्थायी व बुनियादी प्रभाव पड़ता है जो जीवन पर्यन्त अमिट रहता है।

माता पिता को उचित है कि बालक के गर्भ में आने से पूर्व ही मादक द्रव्य मद्य मांस बुद्धिनाशक पदार्थों का परित्याग कर आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम को बढ़ाने वाले शुद्ध सात्विक दुग्ध घृत मिष्ठान, फल आदि भोज्य पदार्थों का सेवन प्रारम्भ कर देना चाहिए। तामसिक और नशीले पदार्थों का सेवन गर्भस्थ बालक को विकृत शरीर वाला बना देता है। अतः भोजन के सम्बन्ध में बड़ी सावधानी की जरूरत है। जैसा अन्न खाया जाता है वैसी ही सन्तान बनती है।

चरक संहिता ने गर्भवती मां को सावधान

thearyasamaj.org

करते हुए कहा है- गर्भवती महिला लड़ने झगड़ने वाली होगी तो सन्तान को मृगी का रोग हो सकता है। शोक में निमग्न रहने से सन्तान भयभीत, कमजोर और कम आयु की होगी। परधन लेने की इच्छा करेगी तो ईष्यालु, चोर, आलसी, द्रोही, कुकर्मी सन्तान को जन्म देगी। क्रोध करेगी तो सन्तान क्रोधी, छली, चुगलखोर होगी। बहुत सोयेगी तो आलसी, मूर्ख, मन्दाग्नि वाली होगी। शराब पीने से सन्तान विकल चित्तवाली होगी इसी प्रकार मीठा, खट्टा, कड़ुआ, नमकीन चटपटे आदि को अत्यधिक खाने से गर्भस्थ शिशु पर विपरीत असर होता है। खट्ठे, मीठे, नमकीन आदि रसों को सीमा में तो खाये जा सकते हैं परन्तु अत्यधिक नहीं।

लोरी देते हुए, सुलाते समय, दूध पिलाते समय मां बच्चे को उत्तम शिक्षा दे तथा मन में सद्विचारों का चिन्तन करती रहे। बच्चे के कान में सुन्दर अर्थ वाले शब्दों को मधुरता के साथ बोले जिससे बालक मधुर भाषा का उच्चारण सीखे। माता-पिता, दादा-दादी, अतिथि विद्वानों से अभिवादन आदि उत्तम व्यवहार करने की शिक्षा दे। सत्यभाषण की आदत डाले। ऐसी ऐतिहासिक प्रसंग सुनाये जिससे बालक में शर्यता, वीरता, साहस धैर्य आदि उत्तम गुणों का विकास हो। बच्चे को कभी भी किसी भी स्थिति में डराये नहीं।

बचपन में भी भूत प्रेत पिशाच जादू टोना, पीर, शीतला, शनि प्रकोप, जन्म से बचने की शिक्षा दे। इनके स्थान पर ईश्वर, उपासना, यज्ञादि शुभ कर्म, सत्संग में जाने की प्रेरणा दे। ब्रह्मचारी हनुमान, भीष्म, परशुराम, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि महापुरूषों के बल चरित्र की कथा सुनाकर संयम की शिक्षा दे।

बालक के निर्माण में दूसरा उत्तरदायित्व पिता का होता है। पिता शब्द का अर्थ रक्षा करने वाला है। जो अपनी सन्तान की भौतिक संसाधनों से रक्षा करता हुआ उसको काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि विकारों से भी सुरक्षा प्रदान करता है वह पिता कहलाने का अधिकारी है। पिता अपनी सन्तान के सामने ऐसा आदर्श जीवन प्रस्तुत करे जिससे बालक सांसारिक दोषों से बचा रहे। बालक पिता के व्यवहारों का अनुकरण बहुत शीघ्रता से करता है। अतः पिता मन वाणी और कर्म से अपनी सन्तान के सामने अच्छी चेष्ठा ही किया करे।

सत्प्रेरणाएं एवं शुद्ध संस्कार मानव को पवित्रता के पथ पर अग्रसर करती हैं और

thearyasamaj.org

असत्प्रेरणाएं एवं अपवित्र संस्कार बालक को कुमार्ग की ओर ले जाती हैं। अतः माता पिता को चाहिए कि सन्तान के समक्ष परस्पर असत्, अशोभनीय, अवांछनीय व्यवहार कभी न करे।

बालक बालिका जब आचार्य के पास शिक्षा ग्रहण के लिए जाये या स्कूल में जाये तो आचार्य व शिक्षक अपने विद्यार्थी को पाठ्यक्रम के साथ-साथ उत्तम आचार विचार का भी पाठ अनिवार्य रूप से पढ़ाये। चोरी, जारी, आलस्य, मादक द्रव्यों का सेवन, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह, लोभ, अभिमान, छल, कपट, लड़ाई झगड़े से होने वाली हानि को बताये और इन दोषों से बचने का उपदेश भी करता रहे।

बालक के दोष दूर करने और गुण सिखाने के लिए यदि ताड़ना की आवश्यकता पड़े तो बड़ी ही कोमलता से स्नेह से प्रताड़ना भी करे। ये प्रताड़ना ऐसी न हो जिससे बच्चे का अंग भंग हो जाये। जैसे कुम्भकार घट बनाते समय ऊपर से ठोकता है परन्तु दूसरा हाथ अन्दर लगाकर संभालता भी है। इसी तरह आचार्य प्रेम स्नेह आशीर्वाद के हाथ का सहारा देता हुआ आवश्यकतानुसार डाट डपट अवश्य करे।

बचपन की इन शिक्षाओं से बालक बालिकाओं का निर्माण होगा। राष्ट्र को उत्तम नागरिक मिल सकेंगे और मानव अपने उद्देश्य धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरूषार्थ चतुष्ट्य् को प्राप्त कर सकेगा। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सम्मुलास का भी यही विषय है।

डी.ए.वी. संस्थाएं जहां बालक बालिकाओं में अक्षर ज्ञान व आजिविका के लिए विद्या बोध कराती हैं वहीं इन संस्थाओं में नैतिक शिक्षा का भी उपक्रम चलता है बालक पूर्ण मानव तभी है जब वह मानवता को धारण करता है। अतः वेद ने कहा-**मनुर्भव** हे मनुष्यों! तुम मनुष्य बनो। मानव शरीर तो मैंने दिया अब मानवता को भी जीवन का अभिन्न अंग बना लो। कविकार प्रणव शास्त्री के शब्दों में यहीं कहूँगा कि-

माता पिता आचार्य जो
शिक्षा दे धर ध्यान।
तब मानव निर्माण
का ऊँचा उड़े विमान।।

प्रचार्य-दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय, हिसार

thearyasamaj.org

'आर्य ईश्वर की उपासना करते हैं, पूजा नहीं'

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रश्न- कितने ही आजकल के आर्य और यूरोप देशवासी अर्थात् अंगरेज आदि लोग इसमें ऐसी शंका करते हैं कि वेदों में पृथिव्यादि भूतों की पूजा कही है। वे लोग यह भी कहते हैं कि पहिले आर्य लोग भूतों की पूजा करते थे, फिर पूजते-पूजते बहुत काल पीछे उन्होंने परमेश्वर को भी पूज्य जाना था।

उत्तर- यह उनका कहना मिथ्या है, क्योंकि आर्य लोग सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त इन्द्र, वरुण और अग्नि आदि नामों करके वेदोक्त प्रमाण से एक परमेश्वर की ही उपासना करते चले आये हैं।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'उपासना विषय' में अनुमानत: 124 बार 'उपासना' शब्द का प्रयोग तथा उसी पुस्तक के 'वेदविषय विचार' के पृष्ठ 70 पर ईश्वर क लिए पूजा शब्द का विरोध एवं उपासना शब्द का समर्थन महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा किया गया है। पृष्ठ 68 पर पूजा के विषय में महर्षि द्वारा लिखा गया है कि जो **दूसरे** का सत्कार प्रियाचरण अर्थात् उसके अनुकूल काम करना है इसी का नाम पूजा है इसे सब मनुष्यों को करनी उचित है। वेदों में जहाँ-जहाँ उपासना व्यवहार लिया जाता है वहाँ-वहाँ एक अद्वितीय परमेश्वर का ही ग्रहण होता है। यहाँ '**दूसरे**' का अर्थ दूसरे मनुष्य होगा, परमेश्वर नहीं।

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में 'मूर्तिपूजा खण्डन विषय' के प्रश्नों के उत्तर में **महर्षि ने लिखा है- जब तुम्हारे हाथों में है तो हाथ क्यों जोड़ते? शिर में है तो शिर क्यों नमाते?**

इतने प्रमाण के पश्चात् भी अनेक आर्यसमाजी एवं उनके पुरोहित ईश्वर पूजा के पक्षधर हैं। उनको ईश्वर के लिए उपासना शब्द ठीक नहीं लग रहा है। इससे यह सिद्ध हो रहा है कि इन आर्यसमाजियों एवं उनके पुरोहितों के अन्दर सूक्ष्म रूप में मूर्तिपूजा का अन्तर्भाव अभी विद्यमान है। इसलिए वे पूजा और उपासना में अन्तर नहीं मानते हुए एक-दूसरे का पर्यायवाची मान रहे हैं। यह वेद एवं महर्षि के विरूद्ध है। ऐसे आर्यसमाजियों एवं उनके पुरोहितों को जिन्हें ईश्वर की पूजा ही करनी है, वे अकेले अपने घर पर करें। आर्यसमाजों के द्वारा किये जा रहे सत्संगों, अधिवेशनों एवं अन्य कार्यक्रमों में अपनी गलत धारणाओं का प्रदर्शन न करें।

thearyasamaj.org

ईश्वर पूजा अथवा मूर्तिपूजा का विरोध करना महर्षि का मुख्य उद्देश्य था।

आर्य समाज का कोई शास्त्रार्थ महारथी हो, पुरोहित हो, लेखक हो, प्रधान हो या मंत्री हो, यदि वेदविरुद्ध क्रियाकलाप या आचरण करता है तो वह महर्षि का शत्रु है। उसका क्रियाकलाप मान्य नहीं होना चाहिए।

हाथ जोड़ने, शिर झुकाने की परिपाटी महर्षि दयानन्द की नहीं है। एक पौराणिक व्यक्ति महात्मा टेकचन्द्र प्रभु आश्रित, जो आर्यसमाजी नहीं होने पर भी आर्य समाज के हवन-यज्ञ आदि सत्संगों में भाग लेते थे और आर्य समाजियों के समक्ष ऐसा करते थे। आर्य समाजी लोग ऐसा करने से उन्हें रोक न सके, अपितु उन्हीं से प्रभावित होकर उनकी देखादेखी वैसा ही करने लगे, जो अब तक समिधादानादि तथा प्रार्थनाओं में चल रहा है।

यज्ञरूप प्रभों हमारे तथा हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वाली यज्ञ-प्रार्थना पंडित लोकनाथ तर्क विद्यावाचस्पति ने लिखा था तथा वे पत्रक रूप में आर्यसमाजों में बाँटा करते थे। महर्षि द्वारा लिखित यज्ञ पद्धति में यह गीत प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित करने से गया जाता रहा है। इन दो अवैदिक पंक्तियों पर मथुरावले श्री प्रेम भिक्षुक जी एवं अन्य अनेक आर्यसमाजियों ने उसी समय विरोध किया था। इस विरोध पर धर्मार्य सभा ने पंडित लोकनाथ जी से इस विषय पर वार्तालाप किया था। इस संघर्षमय विरोध को देखते हुए पंडित जी ने इसे बदलकर 'पूजनीय प्रभो हमारे' तथा 'प्रेमरस में तृप्त होकर' कर दिया जो अनेक यज्ञ पद्धतियों में चलता रहा।

हाथ जोड़ना, शिर झुकाना ईश्वर की सर्वव्यापकता पर प्रश्नचिह्न लगाना है। ईश्वर को अपनी आत्मा में व्याप्त नहीं मानने का परिणाम ही हाथ जोड़ना, शिर झुकाना है। यह अवैदिक प्रचलन है। अवैदिक प्रचलन करने तथा कराने वाले सभी नास्तिक हैं। इस प्रचलन के धारण करने से कहीं आप भी इस नास्तिक समूह में न आ जाँय, अतः **'तर्को वै ऋषि :'** का सिद्धान्त कभी न छोड़े।

पञ्च महायज्ञ विधि (वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित, 1983 ई० का संस्करण) के पृष्ठि 21 पर ***''कृताञ्जलिरत्यन्तश्रद्धालुर्भूत्वैतैर्मन्त्रैः स्तुवन् सर्वकाल सिद्ध्यर्थ परमेश्वरं प्रार्थयेत् ''*** – भावार्थ है-प्रेम में अत्यंत मग्न होकर अपने आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़कर इन मंत्रों से स्तुति और प्रार्थना सदा किया करें। इसमें

thearyasamaj.org

कृताञ्जलि का अर्थ महर्षि ने 'प्रेम में अत्यन्त मग्न होके' लगाया है, हाथ जोड़ना नहीं।

ऋग्वेद 1/1/1 के भावार्थ में महर्षि ने लिखा है कि परमार्थ और व्यवहार विद्या की सिद्धि के लिए अग्नि शब्द करके परमेश्वर और भैतिक अग्नि ये दोनों अर्थ लिये जाते हैं, उसी प्रकार यज्ञ शब्द भी परमेश्वर और भौतिक यज्ञ (शुभकर्म) ये दोनों अर्थ में लिये जाते हैं। आर्य लोग सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त इन्द्र, वरुण, यज्ञ और अग्नि आदि नामों करके वेदोक्त प्रमाण से एक परमेश्वर की ही उपासना करते चले आये हैं **(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेद विषय विचार, पृष्ठि 70)**। ईश्वर को इन्द्ररूप, वरुणरूप, यज्ञरूप, अग्निरूप कहना तथा पूजनीय मानना वेद-विरूद्ध होने से महर्षि की मान्यताओं के भी विरूद्ध है।

आज ईश्वर पूजा का इतना प्रभाव आर्यसमाजियों पर पड़ा है कि बहुत से आर्यसमाजी अपने स्वयं के निवास में तथा व्यवसायिक प्रतिष्ठान में छिपाकर पौराणिक लक्ष्मी-गणेश की मूर्तियाँ, फूल-माला एवं बिजली की चमचमाती बत्तियों से सजाये रखते हैं। ऐसे ही दैनिकी की आड़ में दीवाल को पौराणिक देवताओं के कैलेण्डर से सजाये रखते हैं। पूछने पर थोथी दलील देते है कि हम इनकी पूजा नहीं करते हैं। महापुरूषों का कैलेण्डर टांगना बुरा नहीं है। इनको पौराणिक देवताओं और महापुरूषों में अन्तर दिखाई नहीं देता है। आर्यसमाजी वेद प्रचार तो कराते हैं, परन्तु इनको वेद-नियम धारण में कठिनाई होती है। कारण कि इनके अन्दर से **मूर्तिपूजा** या ईश्वरपूजा की सूक्ष्म भावना निकल ही नहीं रही है। ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन आर्यसमाज एक सम्प्रदाय बन कर रह जाएगा। आर्य लोग हवन रूपी ईश्वर की पूजा करने आर्य समाज में आयेंगे तथा पूजा कर घर को जायेंगे। इनसे अब समाज की एक भी विकृति दूर होनेवाली नहीं है।

अब तो कहीं-कहीं आर्यसमाज मन्दिरों में भी महर्षि के चित्र के साथ पौराणिक देवताओं के चित्र के कैलेण्डर टंगे दिखाई देते है। इस प्रकार आर्यसमाज में लोगों की संख्या बढ़ाने की अभिलाषा नहीं रहती है, परन्तु संख्या बढ़ती नहीं है। दिनानुदिन घटती जा रही है। इस बढ़ती की आशा में हम सिद्धान्त छोड़ते जा रहे है। यह आर्यसमाज का उत्थान नहीं, पतन है। महर्षि ने ठीक कहा है "आँख के अन्धे और गांठ के पूरे" को वेद में भी वैदिक विचारधारा दिखाई नहीं पड़ती है।

रघुनाथ चतुर्वेदी, बेतिया

thearyasamaj.org

अंग्रेजी शासन की गुलामी का दुष्परिणाम
1 जनवरी बनावटी नया साल

हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार पंडित जी विवाह, नामकरण आदि संस्कारो पर यजमान से संकल्प कराते समय सृष्टि संवत का उच्चारण करता कराता है। सृष्टि संवत के साथ ही भारत का प्रत्येक कार्यक्षेत्र अप्रैल माह के प्रथम दिन से प्रारम्भ होता है। विद्यालयों में बच्चों के नई कक्षा का आरम्भ तो 1 अप्रैल से होता है और नया वर्ष मनाया जाता है एक जनवरी को यदि एक जनवरी नया वर्ष होता तो नई कक्षा का आरम्भ भी एक जनवरी से होना चाहिए था किन्तु, ऐसा नहीं है, इसलिए नहीं है क्योंकि भारतीय नववर्ष का आरम्भ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा अर्थात् प्रथमा तिथि से प्रारम्भ होता है। किन्तु भारत का दुर्भाग्य है कि इस पवित्र दिन और विदेशी नववर्ष को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। बड़े शर्म की बात है कि हम अपने नववर्ष को मूर्ख दिवस बनाने का दिन और विदेशी नववर्ष को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। 1 जनवरी के नजदीक आते ही जगह-जगह **'हैपी न्यू ईयर'** के बैनर व बोर्ड लगने लगते हैं। यहाँ तक कि राजनेता भी जनता की इस बेवकूफी में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं व उन्हें मूर्ख बनाते हैं। राजनेताओं को स्पष्ट रूप से पता है कि देश की वित्तीय व्यवस्था को संचालित करने वाले वित्तीय वर्ष का प्रथम दिन 1 अप्रैल का दिन होता है फिर भी वे लोग वोट की फसल काटने के लिए जनता को एक जनवरी पर नववर्ष की बधाईयाँ देना शुरू कर देते हैं। एक माह पूर्व विदेशी नववर्ष की तैयारियाँ भारत में प्रारम्भ कर दी जाती है। करोड़ो रूपये का खर्चा इस उत्सव के लिए भारत में व्यय किया जाता है। होटल, रेस्तराँ इत्यादि अपने अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियाँ करने लगते हैं पोस्टर व कार्डो की भरमार के साथ दारू की दुकानों की भी चाँदी होती है। 31 दिसम्बर की आधी रात एक नववर्ष के स्वागत में बच्चे बूढ़े और नौजवान पलकें बिछाए 12 बजने का इन्तजार करते हैं। इस दिन शराब और शबाब अपने पूरे यौवन पर होता है। विलासिता का नंगा नाच होता है। घड़ी की सुईयां 12 पर आते ही फोन की घंटिया बजनी शुरू हो जाती हैं आतिशबाजी व पटाखे छुड़ाये जाते हैं लड़के ही नहीं लड़कियां भी जाम को होठों से लगाने में नहीं हिचकिचाती और बहुत बड़े हादसों को न्यौता दे बैठती है। 31 दिसम्बर की रात 12 बजे के बाद

thearyasamaj.org

मयखाने घरों व होटलों इत्यादि में बनते नजर आते हैं। हाल ही में 31 दिसम्बर 2010 की रात को दिल्ली के द्वारका जैसे क्षेत्र में एक लड़की का बुरी तरह हताहत और नग्न अवस्था में शव मिला ये इस उत्सव का ही परिणाम था वह लड़की घर से नववर्ष की पार्टी में गई थी। इस प्रकार के सैकड़ो हादसे सड़क दुर्घटनाएँ इस दिन रात के 12 बजे के बाद होते हैं। ये उत्सव है या बेहूदापन। रात-रात भर जागकर जो लोग खुशियाँ मनाते हैं अथवा उत्सव का सेलिब्रेशन करते हैं मानो पूरे वर्ष की खुशियाँ इन्हें आज ही मिल जाएंगी। हम भारतीय लोग पश्चिमी सभ्यता में इतने सराबोर हो चुके हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी समस्त मर्यादाओं को तार-तार कर बैठते हैं। वास्तव में ये हमारी बुद्धिहीनता का परिचय ही तो है ये हमारा पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण या ये कहलो कि गुलामी का असर ही तो है जोकि विदेशी नववर्ष को हम भारतीय नववर्ष स्वीकार करने से नहीं चूक रहे।

भारत में स्वाधीनता से पूर्व इसका कोई महत्व ही नहीं था जितना आज इसके पीछे गाँव से लेकर शहर के बच्चे बूढ़े माताओं, बहनों के दिमागी में पागलपन सवार है अर्थात् पश्चिमी सभ्यता की धूल हमारे ऊपर छाई हुई है। आज हमें स्वाधीन हुए 100 वर्ष भी पूरे नहीं हुए हैं और हम अपनी संस्कृति सभ्यता की घोर उपेक्षा कर रहे हैं प्राचीन वैदिक संस्कृति के जवाब में विश्व के किसी भी कोने में इतनी आदर्श संस्कृति का उदाहरण मिलना मुश्किल है। परन्तु हम गुलामी से उबरना ही नहीं चाहते, इतना गहरा असर अंग्रेजियत का हमारे मानस पटलों पर हो चुका है। ये अंग्रेजों की सोची समझी बड़ी सफलता हासिल की है कि वे बेशक भारत छोड़ गए किन्तु हमने उनकी गुलामी अभी तक नहीं छोड़ी।

12 अक्टूबर 1936 को **'थामस बैबिगंटन मैकाले'** ने अपने पिता को एक पत्र लिखकर बताया कि यदि उसके द्वारा प्रारम्भ की गई शैक्षणिक नीति चलती रही तो यहाँ (भारत) की सम्मानित जातियों में एक भी मूर्तिपूजक नहीं बचेगा लेकिन उससे पहले ज्ञान, बुद्धि और विकासशीलता में आये वैचारिक परिवर्तनों का व्यापक प्रभाव दिखाई देने लगेगा। सन् 1853 में संसदीय समीति के सम्मुख भारत में प्रयोग किये जाने वाले शिक्षा के तौर तरीकों के संदर्भ में राजनीतिक सोच को **'चार्ल्स ट्रेवेलियन'** ने भी इसी रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से भारतीय युवक हमें विदेशी समझना बन्द कर देंगे और धीरे-धीरे उनकी हिन्दुस्तानियत कम होती जाएगी तथा अंग्रेजीयत बढ़ती जाएगी जिसके फलस्वरूप वे

thearyasamaj.org

हमें इस देश से निकालने का कोई भी प्रयास नहीं करेंगे। मैकाले की इसी मानसिकता का नतीजा है कि आज क्योंकि अंग्रेजी के माध्यमों की शिक्षा ही नहीं अपितु अंग्रेजी बोलने पर गर्व की अनुभूति करने वाले भारतीयों का समूह भी अपने देश में देखा जा सकता है। अंग्रेजी का ज्ञानार्जन करता उपयुक्त हो सकता है, लेकिन अंग्रेजियत के नाले में डूब जाना किसी भी प्रकार की बुद्धिमता का परिचायक नहीं हो सकता। इतना ही नहीं आजादी के बाद हमने अपने देश का नाम तब बदल डाला और देश के संविधान में **'इंडिया दैट इज भारत'** का उल्लेख अंग्रेजों ने अपने लोगों से बड़ी सावधानी पूर्वक करा लिया। **इसके पीछे भी यही धारणा काम कर रही थी कि 'भारत को भूल जाओ, इंडिया याद रखो' अंग्रेजों की गुलामी याद रखो क्योंकि भारत को याद रखने पर भरत याद आएंगे, शुकन्तला और दुष्यन्त याद आएंगे, हस्तिनापुर याद आएगा। आजादी के बाद भी हमारी इसी मानसिक गुलामी ने हमारी वेशभूषा बदल दी टाई लगाना फैशन हो गया चोटी कटने लगी जनेऊ उतरने लगे। यहाँ तक कि मीडिया की ओर देखा जाए तो लगभग सभी चैनल पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति को हमारे परिवारों के जहन में उतारने के लिए जुटे हुए हैं ''शीला की जवानी.....'' और ''मुन्नी बदनाम हुई....'' जैसे उत्तेजक गंदे गानों का नव वर्ष इत्यादि उत्सवों पर बार-बार दिखलाया जाना हमारी संस्कृति का चीर हरण ही तो है और हमारी सरकार, हमारा समाज, हमारे परिवार सभी चुप्पी साधे हुए हैं इस तरह भारतीय संस्कृति के पतन के साथ-साथ परिवारों में भारतीयता का लोप होने लगा।** पर्व व त्यौहार मनाने के तौर तरीके बदलने लगे। केक काटकर मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन पर **Happy Birthday To You** कहकर उत्सव मनाना आधुनिकता का परिचायक बन गया। वास्तव में यह भी केवल अंग्रेजीयत के दुष्प्रभाव का ही परिणाम है कि हम अपने जीवन मूल्यों और संस्कारों की हत्या करते जा रहे हैं। स्वतन्त्र भारत की प्रथम सरकार ने नवम्बर 1952 में पचांग सुधार समिति का गठन 'डा० मेघनाद साहा' की अध्यक्षता में करने के लिए सिफारिश की थी। किन्तु तत्कालीन अंग्रेजी की उच्च्व शिक्षा एवं अंग्रेजियत के संस्कार प्राप्त प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू के आग्रह पर ग्रगेरियन कैलेण्डर को ही सरकारी कामकाज हेतु उपयुक्त मानकर 22 मार्च, 1957 को इसे राष्ट्रीय कैलेण्डर के रूप में स्वीकार कर लिया गया जबकि इस कैलेण्डर में 25 मार्च को वर्ष

thearyasamaj.org

का प्रथम दिन माना जाता था, लेकिन चर्च और ब्रिटिश साम्राज्य की मिली भगत से 1 जनवरी वर्ष का प्रथम दिन घोषित कर दिया गया। ऐसा लगता है कि 25 मार्च के आसपास ही नव विक्रमी संवत का प्रथम दिन होने के कारण से इसे एक जनवरी कर दिया गया। वैसे तो जिस ईसाईयत में ईसा के जन्मदिन पर विवाद हो, वहाँ का कैलेण्डर पूर्ण कैसे हो सकता है? ग्रीक चर्च 7 जनवरी को ईसा का जन्मदिन बताता है। ईसरायल 6 जनवरी को जन्मदिन सामूहिक भोज दिवस के रूप में मनाता है। 530 ई. से 25 दिसम्बर को ईसा का जन्मदिन कहा जाने लगा, यह रहस्योद्घाटन '**लाइफ ऑफ क्राइस्ट**' के लेखक '**डीन फरार**' ने अपनी पुस्तक में किया है।

ऐसी अवस्था में इस कैलेण्डर को राष्ट्रीय कैलेण्डर के रूप में स्वीकार करना हमारी अंग्रेजी सोच ही दिखाई दे रही है। इस कैलेण्डर में कोई मास 30 दिन, कोई 31 दिन, कोई 28 दिन या 29 दिन का होता है। प्रतिवर्ष 9 मिनट 11 सैकेण्ड का कोई हिसाव नहीं, मासों के दिन में कोई क्रमबद्धता नहीं। भारत में ईस्वी सम्वत् का प्रचलन अंग्रेज शासकों ने 1752 में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक नामों में प्रथम छः माह यानि जनवरी से जून रोमन देवताओं (जोनस मार्स व मया इत्यादि) के नाम पर हैं। जुलाई और अगस्त रोम के सम्राट '**जुलियस सीजर**' तथा उनके पौत्र '**अगस्टस**' के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक रोमन संवत के मासों के आधार पर रखे गये। जुलाई और अगस्त क्योंकि सम्राटों के नाम थे इसलिए दोनों ही 31 दिनों के माने गए अन्यथा कोई भी दो मास लगातार 31 दिनों या लगातार बराबर दिनों के संख्या वाले नहीं हैं ईस्वी कैलेण्डर को ही समस्त राजकीय कार्यों का आधार बना दिया गया। परिणाम यह हुआ कि 1 जनवरी भारत के लोगों को अपने नववर्ष रूप में दिखाई देने लगा और हम एक दूसरे को शुभकामनाएं देकर अपने को गौरवान्वित महसूस करने लगे अर्थात् आजादी की हवा में भी हम भारतीय लोग अंग्रेजीयत को लादकर घूमने में गर्व महसूस करते हैं। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों को अंग्रेजों ने नौकरी का ऐसा लालच दिया कि जन्म लेते ही हम अंग्रेजी सिखाने पर जोर देने लगे। आज वैश्वीकरण की दौड़ में अंग्रेजी अनिवार्य लगती है, क्योंकि हमने अपनी भाषा पर गर्व ही नहीं किया तो दुनियाँ हमारे साथ क्यों चलेगी। किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज में '**किंग जार्ज**' का नाम हटाने पर आपत्ति करने वालों ने भारत के स्थान पर 'इंडिया' के प्रयोग में अपनी आपत्ति क्यों नहीं

thearyasamaj.org

दर्ज कराई। आईए! ईसवी नववर्ष पर विचार करें कि क्या ईसा से पूर्व भारत का कोई अस्तित्व था या नहीं? इतिहास के पन्ने गवाह हैं कि हमारा भारत कभी जगद्गुरू था, ज्ञान-विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अद्भूत प्रतिभाएं हमारे पास थी। हमारे इतिहास, साहित्य, जीवन मूल्य तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण में विकृतियाँ लाने का सतत् प्रयत्न मैकाले के मानसपुत्रों ने विगत 150 वर्षों से अधिक वर्षों में किया है। उसी का दुष्परिणाम है कि एक जनवरी को हम अपना नववर्ष मनाने की भूल कर रहे हैं।

हमारा भारतीय सृष्टि-सम्वत्सर दुनियाँ का सर्वप्रथम सर्वश्रेष्ठ एवं नैसर्गिक सम्वत्सर है सृष्टि के रचनयिता परमपिता परमात्मा ने वनस्पति एवं सम्पूर्ण जीव जगत की रचना करने के उपरान्त यहाँ तक कि छहों ऋतुओं (बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर व हेमन्त) को उत्पन्न कर पृथ्वी माता को दुल्हन की तरह सजाकर तत्पश्चात् मनुष्य को उत्पन्न किया, क्योंकि ईश्वर की सारी ही कृतियों में मानव सर्वश्रेष्ठ कृति है, पृथ्वी माता के आंचल में जब मनुष्य ने सर्वप्रथम अपने लोचन खोले, उस समय ऋतु वसन्त अपनी सुन्दरतम आभा बिखेर रही थी। समझने की बात यह है कि कोई भी इन्जिनियर जब इंजन या किसी मशीन का निर्माण करता है तो साथ में जानकारी के लिए साहित्य, परिचय-पुस्तिका भी देता है उसमें सम्पूर्ण जानकारी होती है। इसी प्रकार उस परम शक्ति महान इंजीनियर ईश्वर ने सृष्टि रूपी मशीन का निर्माण किया, तब 'वेद' रूपी साहित्य (ज्ञान) उन प्रथम महामानवों (अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा) के अन्तकरण में दिया। 'वेद' सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान के भण्डार हैं। वेदज्ञान के आधार पर हमारे प्राचीन महा-मनीषियों ने आदि सृष्टि से लेकर आज तक हर पदार्थ का विवरण रखा है मनवन्तर से लेकर युग-युगान्तर वर्ष, माहा, पक्ष, सप्ताह, दिन-वार, मिति, तिथि, घड़ी, पल तक का हिसाब आज मौजूद है हमारे विद्वान् ज्योतिष शास्त्रियों ने ब्रह्माण्ड के ग्रह नक्षत्रें का उनकी गति एक का ब्यौरा रखा है। सूर्य चन्द्र ग्रहण उसक स्पष्ट उदाहरण है।

इस धरातल पर मानव उत्पत्ति के साथ ही वैदिक सम्वत्सर प्रारम्भ हुआ, जिसे सौर सम्वत् या सृष्टि सम्वत् भी कहा जाता है। आज तक उसकी संख्या इस प्रकार है:- 1, 96, 08, 53, 111 वर्ष वर्त्तमान में चल रहा है। ऋतुराज बसन्त में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही हमारा प्राचीन आर्यावर्तीय (भारतीय) सम्वत्सर प्रारम्भ हुआ अधिकांश भारतीय संवत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही बदलते हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा भारतीय पंचांग के अनुसार महीने का प्रथम

thearyasamaj.org

दिवस होता है यही कारण है कि दक्षिण भारत के पंचांग में प्रत्येक माह शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर अमावस्या पर पूर्ण होता है ईसा से 57 वर्ष पूर्व राजा विक्रमादित्य ने शकों को परास्त करके भारतवर्ष से निकाल दिया था। अपनी भारी विजय की स्मृति में विक्रमी संवत् चलाया तथा इसका प्रारम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया। आज विक्रमी संवत प्रारम्भ किया उस दिन सृष्टि संवत् 1, 96, 08, 51, 044 चल रहा था। राजा विक्रमादित्य ने भी प्राचीन परम्परा एवं इतिहास को जीवित रखने के उद्देश्य से इसी दिन विक्रमी संवत् प्रारम्भ किया था इस मनोरम बेला में तमाम प्राणीजगत, लोक, वनस्पति जगत तक उत्साहित एवं हर्षित होता है, और पेड़ पौधों में पतझर होकर नई कोपलें आ जाती है। प्रकृति मदमस्त होकर अपनी अनुपम छटा बिखेरती है। ऐसे सुहाबने मौसम में सभी कुछ नया-नया होता है और प्रकृति अपना पुराना स्वरूप बदलकर नवीन परिधान ओढ़कर दुल्हन की भांति अपने आपको सजाकर मनमोहक लगती है। चैत्र मास तक भारत वर्ष के सभी प्रान्तों में पूर्णरूप से फसल कट चुकी होती हैं मौसम की छटा भी निराली होती है। न कही गरमी, न सर्दी का प्रभाव होता है चारों तरफ पुष्पों की सुगन्ध वायुमण्डल में बिखरी होती है। भौरे गुन्जायमान होकर नववर्ष के स्वागत का गीत गाते हैं।

ऋतुराज बसन्त की छटा कवि, लेखक, युवक, युवती, बच्चे, बूढ़े किसको प्रिय नहीं लगती और तो और पक्षियों को चहचहाहट और कोयल की मीठी बोली भी नववर्ष का अभिनन्दन करती है कहाँ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसंवत्सर (नववर्ष) की छटा और कहाँ दिसम्बर और जनवरी के महिने में शीतलहर की तेजमार इन दोनों महीनों में एक तरफ तो तन ढ़कने के लिए वस्त्र दुर्लभ हो रहा है, किसी के प्राण निकल रहे हैं तो दूसरी तरफ जश्न की तैयारी कर रहे हैं। यह अत्यन्त शोचनीय विषय है हम भारतीयों के लिए यह कोई नया वर्ष है। सभी को हिला देने वाली ठण्ड से इस समय पेड़ पौधे सिकुड़े हुए, पशु-पक्षी दुबके हुए होते हैं, ऐसी अवस्था में हम पाश्चात्य ईसा संस्कृति का उत्सव मनायें यह निन्दनीय कार्य है ईसा के जन्म या मृत्यु का उत्सव भी इन दिनों होता है इसलिए ईसा से सम्बन्ध करने अर्थात् जोड़ने के लिए उन्होंने अपने यहाँ 1 जनवरी को नया वर्ष या यूँ कहें कि **'न्य ईयरस डे'** मनाया। किन्तु हमारे यहाँ नव वर्ष (नव संवत्सर) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही मनाया जाता रहा है। यह संवत्सर समस्त मानव जाति का नव वर्ष है क्योंकि मनुष्य की आदि सृष्टि (उत्पत्ति) 'त्रिविष्टप' जिसे तिब्बत कहते हैं वहाँ हुई और कहीं नहीं। जब तिब्बत में जनसंख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई तब लोग वहाँ से आर्यावर्त में बस

thearyasamaj.org

गए। उसके पश्चात् संसार के अन्य भागों में गए। जिस दिन मानव व वेदों की उत्पत्ति हुई उसी दिन से नव संवत्सर का भी शुभारम्भ हुआ। आदिकाल से ही पूर्वज इसी नववर्ष को मनाते चले आ रहे हैं।

सृष्टि का कार्यकाल एक हजार चर्तुयुगी माना जाता है जो ब्रह्मदिन कहलाता है। इतना ही समय प्रलय काल माना जाता है जो ब्रह्मरात्रि कहलाती है। सृष्टि और प्रलय का यही क्रम आदिकाल से चला आ रहा है तथा चलता रहेगा। इसका न कोई आदि है ना अन्त। प्रलयकाल में जो खाली स्थान बचा होता है वह आकाश है। आकाश की उत्पत्ति नहीं होती। ताकि प्रकृति व परमाणु वहाँ ठहर सकें। सृष्टि रचना में मानव की उत्पत्ति होते ही, काल गणना का कार्य प्रारम्भ हो गया। सप्ताह में सात दिन होते हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रलय के अन्त में सर्वप्रथम सूर्य उदय होता है, उसी के प्रकाश से पृथ्वी तथा अन्य तारागण प्रकाशित होते हैं जिस दिन सृष्टि हुई, उसी समय ब्रह्ममुहूर्त के प्रथम प्रभात में पूर्व दिशा की ओर से उदित (उदय) होते हुए प्रकाश के पुन्ज सूर्यदेव के सबने दर्शन किए। **'सूर्य'** को रवि भी कहते हैं, इसीलिए सप्ताह के प्रथम दिन का नाम **'रविवार'** यानि सूर्य का दिन प्रचलित हुआ। अगले सांयकाल के समय पश्चिम दिशा में दूज के चंद्रमा की सुन्दर, शीतल, सौम्य, समीर रेखा को देख कर इस दिन का सम्बोधक नामांकन के रूप में **'चन्द्रवार'** भी कहा जाता है। अगले दिन भूमि पर उपजे नाना प्रकार के सुन्दर और स्वादु पदार्थों को देखकर सब आनन्दित हो उठे, इस कारण से इस दिन को सम्बोधक नामोच्चारण **'भोमवार'** रखा गया, समस्त पदार्थों को प्रदान करने वाली और मंगलकारी होने से **'मंगलवार'** भी कहते हैं आगामी दिन बुद्धि का विकास हुआ, इस कारण से इस दिन सम्बोधक उच्चारण **'बुधवार'** रखा गया। अगले दिन अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा आदि चार ऋषियों के द्वारा वेद ज्ञान सुना और प्रथम मनु **'स्वायम्भुव मनु'** जी महाराज ने चारों ऋषियों से सम्पूर्ण ज्ञान देने का आग्रह किया जिसे स्वीकार कर चारों ऋषियों ने चारों वेदों का सम्पूर्ण ज्ञान, **'स्वायम्भुव मनु'** को कंठस्थ कराकर **'बह्मा'** की उपाधि से विभूषित किया और यहीं से ही गुरू शिष्य की परम्परा का जन्म हुआ, इसी कारण इस दिवस का सम्बोधक उदबोधन **'गुरूवार'** रखा गया। अगले दिन शुक्र की जागृति होने लगी, स्त्री-पुरूष के संपर्क की इच्छा बनने लगी इस लिए इस दिन का सांकेतिक नाम **'शुक्रवार'** रखा गया। यहीं से ही परिवार बन्धन का आरम्भ हुआ। अगले दिन स्वार्थवृति की भावना उमड़ पड़ी, तेरा मेरा होने लगा। बुद्धियों पर तामसपन छाने लगा, तमोगुण की अधिकता के कारण क्रोध भी बढ़ने

thearyasamaj.org

लगा, इसी कारण इस दिन का सम्बोधक नाम तमोगुण सूचक **'शनिवार'** सबके नामांकन के साथ **'वार'** शब्द लगा है **'वार'** का अथ दिवस अथवा दिन होता है।

भारतीय गणित ज्योतिष के अनुसार नक्षत्र गणना के आधार पर प्रथम **पूर्णिमा** के **'चित्रा नक्षत्र'** पड़ा इसी से **'चैत्र'** महीना बना इसी प्रकार **'विशाख नक्षत्र'** से **'वैशाख'** नामकरण हुआ **'ज्येष्ठा नक्षत्र'** से **'जेठ'** महीना बना। **'उत्तर आपाढ़ नक्षत्र'** ही **'आषाढ़'** महीने का जन्मदाता हुआ, **'श्रवण नक्षत्र'** ने **'श्रावण'** मास का नामकरण किया, **'उत्तर भाद्र नक्षत्र'** के कारण **'भादो'** महीना अस्तित्व में आया, **'अश्विनी'** महीने का जन्मदाता **'अश्विन नक्षत्र' ही है**, **'कृति नक्षत्र'** से **'कार्तिक'** मास व **'मृगाशिरा नक्षत्र'** से **'मार्गशीर्ष'** महीना बन, **'पूजा नक्षत्र'** से **'पोष'** महीना तथा **'माघ नक्षत्र'** से **'माघ'** महीने का नाम रखा गया, इसी प्रकार **'उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र'** से **'फाल्गुन'** महीने का नाम रखा गया।

आगे इस पूर्व परम्परा अनुसार **आर्यों के अधिकांश संवत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही आरम्भ किए गए ब्रह्मदिन सृष्टि संवत वैवस्वत आदि मनवन्तर आरम्भ सतयुगादि युगारम्भ, काल सम्वत्, शक सम्वत्, विक्रमी सम्वत्, चैत्र शुदि प्रतिपदा को ही आरम्भ (नववर्ष) का पावन पर्व मनाने की प्रथा प्रचलित है, मुस्लिम राज्य में आर्यों (हिन्दुओं) की संस्थाएं अस्त-व्यस्त होने पर भी यह परम्परा बनी हुई थी, वस्तुतः यही भारतवर्ष का नवसम्वत्सर आरम्भ दिवस है** इसी दिन महाराज श्री राम व महाराज युधिष्ठिर का राजतिलक हुआ था। इसी पवित्र दिन महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने हमें उत्तम संस्कार देने वाली पतित पावनी माँ रूपी संस्था आर्यसमाज की स्थापना की थी हमें उनकी उन पवित्र भावनाओं का सम्मान करना चाहिए जिनके कारण पूरे विश्व में हमारी सभ्यता व संस्कृति की झलक दिखाई पड़ती है। लेकिन दुभाग्यवश भारतीय लोग व आने वाला (यूथ) युवा भविष्य अंग्रेजों के अत्याचारों को भूल गए और भूल गए उनकी मानसिकता को कि किस प्रकार हमारी भारतीय सभ्यता व संस्कृति का समूल नष्ट करने का प्रयास किया था हमारे पुस्तकालय जलाए गए, वेद विलुप्त हो गए, त्यौहारों तथा परम्पराओं पर प्रतिबन्ध लगा दिए। शेष बचे आर्ष साहित्य में मिलावट करके अर्थात् विकृत स्वरूप में हमारे समक्ष रखा। शिक्षा का माध्यम पहले उर्दू फिर अंग्रेजी हुआ इसका प्रभाव यह हुआ कि धीरे-धीरे हमारे भारत के बच्चे तन से तो भारतीय रहे किन्तु इनके मन ईसाइयत के रंग में रंग गए जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सामने है कि हम अंग्रेजी

thearyasamaj.org

नववर्ष 1 जनवरी को ही भारतीय नववर्ष मनाते हैं। और **हमारे सृष्टि रचना के महान दिवस के मूर्ख बनाने को दिन अर्थात्** अप्रैल फूल **(मूर्ख दिवस) मनाते हैं इस दिन यदि हमने किसी को मूर्ख बनाया तो सोचते हैं कि धन्य हो गए। किन्तु कभी ये नहीं सोचा कि अंग्रेजियत में पले लोगों ने हमसे हमारे इस महान दिवस को मूर्ख दिवस मनवाकर हमें मूर्ख बना दिया अतः आईए अपनी भूल को स्वीकार करते हुए अपने महान पूर्वजों के पद् चिन्हों पर चलने का प्रयास करें और अंग्रेजियत की मानसिक गुलामी का परित्याग कर स्वतंत्र राष्ट्र जीवन को संचालित करें एवं अपनी सभ्यता व संस्कृति पर हमारे ही द्वारा लगातार हो रहे कुठाराघात से रक्षा करें और भारतीय नवसम्वतसर आरम्भ दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही नव वर्ष मनायें।** अन्त में मैं पाठकवृन्द के लिए अनेक शुभ कामनाएं समर्पित करता हूँ हम भारतीयों के लिए पर्व सांस्कृतिक और राष्ट्रीय महत्व रखता है क्योंकि इससे एक तो हम अपनी सत्य सनातन् वैदिक संस्कृति के साथ अपने को जुड़ा समझते हैं दूसरे अपने गौरवशाली भव्य अतीत को स्मरण कर आत्मस्वाभिमान अनुभव करते हैं, तीसरे राष्ट्रीय भावना का संचार हमारी रग-रग में होता है, चौथे हमें उस धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, मानसिक जागरण का बोध होता है जिसकी मशाल महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के रूप में प्रज्ज्वलित करके जलाई थी।

अतः कलम को विराम देने से पूर्व एक बार पुनः इस पावन दिवस पर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपके समस्त परिवार बन्धु-बान्धवों व मित्रजनों के जीवन में शुभ कर्मों, नई खुशियों, धन-धान्य, आरोग्य व सुख शान्ति का आधार बने भारत के प्रत्येक नर-नारी से आशा करता हूँ कि इस पावन दिवस पर सब मिलकर संकल्प करें विदेशी बैशाखियों के सहारे छोड़कर, स्वाभिमान के साथ, स्वाधीन और स्वावलम्बी होकर जीवन जीने का। अगर ऐसा नहीं हुआ तो कवि के शब्द असत्य नहीं होंगे-

बुलबलो गर तुम्हारा चमन लुट गया
चहचहाने बताओ कहाँ जाओगे।
फूल-फल ना लगेंगे किसी शाख पर
अशियाना बनाने कहाँ जाओगे।
ये हमारा चमन रंग-रंगीला जहन
हम रहें न रहें पर रहेगा वतन
फड़फड़ा कर उठो जोरे बाजू भला
फिर उन्हें आजमाने कहाँ जाओगे।
बुलबुलो गर..............................

जनहित में -

डॉ० गंगा शरण आर्य
(डी.एनवाई.) एवं मास्टर कॉस्मिक एनर्जी हीलर)

thearyasamaj.org

विश्व संगठन के वैदिक आधार-मैत्री और समता

-प्रो० उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है। डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त - **"योग्यतम की जीत"** । योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वही संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल पर राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है।

पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है, सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है - **"अश्रद्धा मनृत्ये दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।"**

अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता, इत्यादि को देखा और सत्य, करुणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यों को पाया। वेद का मन्त्र यह कहता ह कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करुणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार है।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त "योग्यतम की जीत" के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार **"उपनिवेशवाद"** को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में

thearyasamaj.org

अपने देशों के उपनिवेश बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग आफ नेशन्स का संगठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षों में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागासाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त **''संयुक्त राष्ट्र संघ'' (यू० एन० ओ०)** का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से था। अतः थोड़ी अधिक सूझ-बूझ, मैत्री और समता दिखायी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संघ का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद्, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह सभी संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार- वीटो-संगठन को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें, रुपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनियम दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार **''क्रय शक्ति की समान्ता''** । (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होना चाहिये। यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद् आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएँ हैं। ये निर्बलताएँ विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती है।

वैदिक आदर्शो के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है-

thearyasamaj.org

"**सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चिद् दुखः भाग् भवेत्॥**"

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतंत्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रश्रय देते हैं।

"**मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि सीमक्षन्ताम्।**
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥"-

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें।

इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु-पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने।

संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रों में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणा :- वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है - "**ऋग्वेद का मण्डल-मणि-सूत्र।**" ऋग्वेद में दस मण्डल है। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्ट्रो में समानता है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मन्त्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है -

"**ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी,**
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः।
समानेन वो हविषा जुहोमि॥"

मन्त्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

thearyasamaj.org

उत्तम चरित्र निर्माण की विशेषताएँ

पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक

श्रेद्धेय पाठक जी,

इस वैज्ञानिक युग में मानव ने बहुत भौतिक उन्नति कर ली है और नित्य नये-नये ब्रह्माण्ड के रहस्यों की खोज में लगा हुआ है। मनुष्य ने अपने बल से समुद्र की छानबीन कर डाली, आकाश में उड़ा तो तारों नक्षत्रों व ग्रहों की छानबीन कर डाली। नदियों के प्रवाह मोड़ दिये, वायु को वश में करके नाना यान बना डाले, आग बरसाने वाली गर्मी में शीतल वायु का श्रोत्र कर डाला, जल का मन्थन करके विद्युत अविष्कार कर डाला और सम्पूर्ण पृथ्वी को माप डाला, अखण्ड काल की गणना कर डाली, सम्पूर्ण भूतों पर विजय प्राप्त करके समस्त शक्तियों को जान लिया। नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण कर डाला, इससे मानव गर्वित हो उठा और यह गर्व होना मनुष्य का अनुचित भी नहीं है।

किन्तु इतना सब कुछ करने के बाद हे मनुष्य तूने कभी सोचा है तेरा रूप चरित्र क्या है। तूने अपने आपको देखा है। इस पंचतत्व के शरीर को जानने का कभी प्रयत्न किया है। ज्यों-ज्यों भौतिक उन्नति मनुष्य कर रही है त्यों-त्यों नैतिक चरित्र भी गिरता जा रहा है, आइए इस पर विचार करते हैं।

<u>पन्चस्वन्तः पुरूष या वियेश (यजु०)</u>

मानव को उत्तम चरित्र बनाने के लिये निम्न पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए। पुरूष के भीतर स्थित है। प्रत्येक पुरूष अपने आप में प्रविष्ट है, वहीं परिवार में प्रविष्ट है और एक राष्ट्र में प्रविष्ट है, विश्व में प्रविष्ट है। प्रत्येक अपने आप में एक इकाई है। किसी परिवार का, समाज का, राष्ट्र का, विश्व का अंग है। मानव चरित्र की पाँच शाखाएं हैं। इन पाँच चरित्रों पर चल कर ही मानव ईश्वर पुत्र कहला सकता है।

<u>उत्तम चरित्र की पाँच शाखाएँ</u>

1. वैयक्तिक चरित्र 2. पारिवारिक चरित्र 3. सामाजिक चरित्र 4. राष्ट्रीय चरित्र 5. वैश्व चरित्र। आइए इन पर क्रमशः विवेचना करते हैं।

1. <u>वैयक्तिक चरित्र-</u> इसका सम्बन्ध अपने आपसे है, व्यक्तिगत जीवन जीने के लिये सात गुण होना आवश्यक है।

1. सुश्रुति 2. सुवाणी 3. सुस्नेह 4. सुसेवा 5. सुसंयम 6. निर्लोभी 7. निस्वार्थी।

ये सात उत्तम चरित्र मानव के मूलाधार हैं। कलेवर बढ़ने के कारण केवल सांकेतिक गुणों को प्रस्तुत किया है। शिष्ट व्यक्ति अशिष्टता का

thearyasamaj.org

उत्तर शिष्टता से देता है। अभद्र का भद्रता से, अपमान का मान से, बुराई का भलाई से, अन्याय का न्याय से देता है।

2. पारिवारिक चरित्र- यदि वैयक्तिक चरित्र उत्तम है तो पारिवारिक चरित्र भी उत्तम होता है। परिवार में क्रोध मन मुटाव, रूष्ट होना, बोल चाल बन्दर करने का कोई स्थान नहीं है। प्रत्येक सदस्य का ध्यान रखना चाहिए, एक दूसरे की भावनाओं की कदर करनी चाहिए। एक पूजा पद्धति, सात्विक संस्कार, पवित्र वैदिक धर्म मार्ग पर चलना तथा सात्विक खान-पान होना चाहिए। परिवार में प्रत्येक सदस्य को निस्वार्थ भाव से तथा अनुशासन से रहना चाहिए। क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि-

अनुवृतो पितु पुत्री माता भवतु समना।
समयंच सव्रता भूत्वा वांच वदतु शान्तिवाम।।
सन्तुष्टो भार्य्या भर्ता भर्ता भार्या तथैवच।
यशिमन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम।।

3. सामाजिक चरित्र - मानव सामाजिक प्राणी है। उसे कदम-कदम पर एक दूसरे की सहायता की आवश्यकता होती है। उसे सर्वहितकारी नियम पालने करने चाहिए। उसे सदैव समाज की व्यवस्थित बनाने के लिए निम्न नियमों का पालन करना चाहिए।

1. अहिंसा 2. सत्याचरण 3. अस्तेय
4. ब्रह्मचर्य 5. अपरिगग्रह

जो मनुष्य सदैव अहिंसा का पालन करेगा, वह सत्यमार्गी होगा, जो सत्यमार्ग पर चलेगा, वह संयमी होगा, उसमें त्याग की भावनायें होगी।

उदाहरण- हम एक कप चाय पीते हैं तो विचार करें कि उसमें कितने आदमियों के सहयोग से चाय पत्ती बनाई। किसी ने गाय पाली और दूध उपलब्ध कराया, किसी ने चाय बनाई, पिलाई, तब हम एक कप चाय पी पाते हैं। ऐसे ही हम समाज में प्रत्येक वस्तु का उपभोग कर रहे हैं अर्थात् हम समाज में एक दूसरे के सहारे के बिना जीवन नहीं जी सकते हैं। इसलिए हमें सामाजिक चरित्र में आदर्श होना चाहिए। मनुष्य को सदैव आत्म संतोषी होना चाहिए।

उदाहरण- दो वृक्षों का वृतान्त- एक वृक्ष ने दूसरे से कहा कि भैय्या जब तक मै हरा-भरा था, तब तक यही लोग मेरे पास झोलियां लेकर आते थे और मेरी छांव में विश्राम करते थे और आज जब से मैं सूख गया हूँ, यही लोग कुल्हाड़ा लेकर मुझे काटने आ रहे हैं। दूसरे वृक्ष ने कहा भाई आप इस सोच की अपेक्षा यह सोचते कि आज जब मैं सूख गया हूँ, मर गया हूँ तब भी दूसरे के काम आ रहा हूँ तो कितना आत्म संतोष होता।

4. राष्ट्रीय चरित्र- मातृभक्ति, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र निष्ठा, राष्ट्र सेवा राष्ट्र हेतु बलिदान आदि राष्ट्र की उन्नति के साधन हैं। मानव का

thearyasamaj.org

सर्वप्रथम कर्तव्य मातृभूमि की रक्षा करना है। राष्ट्र उन्नति में सदैव राष्ट्र की उन्नति रक्षा, श्रद्धा के भाव रख कर प्रत्येक सामाजिक कार्य करने चाहिए। राष्ट्र उन्नति स्वच्छ विचार, समान अधिकार, संवैधानिक मान्यता, राष्ट्र प्रेम और सर्व हितकारी नियमों का पालन करना आदि राष्ट्र की रक्षा में सहायक होते हैं।

उदाहरण - इतिहास प्रमाण है, लाखों व्यक्तियों ने राष्ट्र रक्षा में निस्वार्थ भाव से अपना बलिदान दिया है, हंसते-2 फाँसियों को चूमा है। आज भी यदि नेतृत्व के अन्दर राष्ट्र हित की भावनाएँ आज जाए तो हमारा राष्ट्र सर्वोत्तम सुख शान्ति, निर्भय व सदैव सुरक्षित रह सकता है।

5. **वैश्व चरित्र**- अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों में शुद्ध आचार संहिता का पालन राष्ट्र हित में विदेश नीति और सर्वप्रथम राष्ट्र की मर्यादा को रखकर नीतियाँ बनाना और वस्तुओं के आयात, निर्यात में राष्ट्र हित में व्यापार करना, सर्व मानव हितकारी नियमों के पालन के लिए हथियारों का प्रतिबन्ध/एक दूसरे के क्षेत्र मं अतिक्रमण न करना, सीमाओं का उल्लंघन न करना, परस्पर प्रत्येक राष्ट्रों को सदैव भाईचारा की भावनाओं से व्यवहार करना चाहिए, तभी विश्व में शान्ति रह सकती है।

उपसंहार निवेदन

ईश्वर से संसार का संविधान, वेदों को बनाया है और मानवों को धर्म वैदिक, धर्म संस्कार, संस्कृति, सभ्यता पर चलने का वेदों में निर्देश दिया है। व्यक्तिगत स्वार्थ, अन्धविश्वासी धर्म पालन, काल्पनिक ईश्वर पूजा, भ्रष्टाचार से धन अर्जित करना, सदैव निजि स्वार्थ में लगा रहना आदि गुणों का निषेध किया है।

ईश्वर कृपा से सदियों उपरान्त भारत रत्न, राष्ट्र पितामह, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को ईश्वरीय संविधान वेदों की ओर लौटाया, उन्होंने सदा-सदा के लिए ईश्वर संविधान का प्रचार होता रहे, समाज के लोग ईश्वर को व ईश्वरीय शिक्षा वैदिक मार्ग को भूल न जाए। उसके सतत प्रसार के लिए आर्य समाज का गठन करके एक चिर स्थाई योजना एवं सन्देश का मार्ग बनाया है। आर्य समाज मानव मात्र के आत्म उत्थान व ईश्वर से जोड़ने का विस्तृत कार्य कर रहा है और इस भौतिक युग में सर्वोच्च ईश्वरीय धर्म पालन का संगठन है। आइए यदि हमारे चरित्र में कहीं गिरावट आ रही है या आ गई है तो हम आज से ही उपर्युक्त संदेश का पालन करने में अग्रणी हो जाए।

thearyasamaj.org

-: समाचार :-

2. गोगरी जमालपूर छठ मेला में दिनांक 30 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2014 तक वेद प्रचार कार्यक्रम हुआ, जिसमें मंच संचालक श्री भूदेव सहली मेला अध्यक्ष ने किया। पं० विजय चन्द्र आर्य मंत्री के द्वारा पं० दयानन्द सत्यार्थी संगीताचार्य गौ संर्वधन पर प्रकाश डाला तथा गंगा स्थल, धूमपान, ढोंग, पाखण्ड का खंडन किया एवं राष्ट्र रक्षा आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती के त्याग तपस्या पर प्रकाश डालें जिससे जनता में सुनने का उत्साह देर रात्री तक बना रहा।

3. आर्य समाज गोविन्दपूर खगड़िया द्वारा दिनांक- 4 नवम्बर से 6 नवम्बर तक ग्रामीण वैदिक धर्म प्रचार हुआ इस अवसर पर पं० दयानन्द सत्यार्थी आर्य भजनोपेदशक पं० आनंद आचार्य जी द्वारा वेद गीता के द्वारा श्री कृष्ण योगीराज के संदेश को गीत के माध्यम से कर्मफल के सिद्धांत को रखा। महिलायें अत्यधिक हवन में उपस्थित होकर भाग लिये। आर्य समाज के अध्यक्ष श्री दामोदर प्र० यादव ने महर्षि दयानंद के जीवन पर आधारित गीतों की प्रशंसा किये तथा प्रत्येक वर्ष कार्यक्रम को करने का संकल्प लिया।

4. दिनांक 11 नवम्बर से 13 तक आर्यसमाज वरौत हरियाणा का उत्सव बड़े धूम धाम से हुआ इस अवसर पर पं० धर्म देव शास्त्री, पं० जित्येन्द्र देव, पं० दयानन्द सत्यार्थी भाग लिये। उत्सव के आरम्भ में ध्वज गान दयानन्द सत्यार्थी द्वारा सम्पन्न हुआ सभी विद्वानों का कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

5. नरहन सिडीया शिवनाथ पूर ग्राम के निवासी श्री नारायण आर्य के पुत्र श्री ओम प्रकाश आर्य के यहाँ वैदिक गोष्ठि मनायी गयी तथा इस अवसर पर पं० दयानन्द सत्यार्थी द्वारा प्रवचन तथा प्रभावशाली भजन भी हुए, दूसरे दिन दो बालक/बालिकाओ का मुण्डन संस्कार भी हुआ। श्री हरिचन्द्र आर्य, श्री सत्यनारायण आर्य का भजन एवं श्री उदय कुमार आर्य का तबला वादन हुआ।

6. ग्राम ल्योरहन जि० समस्तीपुर में दिनांक 14 एवं 15 नवम्बर को शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ इस अवसर पर दयानन्द सत्यार्थी द्वारा मृतक भोज तथा मृतक श्राद्ध वेद विरूद्ध पर भजन प्रवचन से उपस्थित दर्शकों का आह्वान किया। राज कु० शास्त्री ने श्री दिनेष पुस्पम द्वारा धन्यवाद ज्ञापन हुआ।

7. मिश्रौलिया आर्य समाज के प्रधान डा. राम देव सिन्हा द्वारा प्रत्येक पूर्णिमा के अवसर पर वेद गोष्ठि होता है अगहन पूर्णिमा के अवसर पर पं० दयानन्द सत्यार्थी द्वारा आर्य समाज के सिद्धांत पर आधारित प्रवचन, गायन सराहनीय रहा, इस गोष्ठि में श्री हरिचन्द्र आर्य, श्री सत्यनारायण आर्य, श्री नरायण आर्य, श्री रामरतन शास्त्री, श्रीमती आशा देवी आर्य इत्यादि अन्य श्रद्धालुओं ने भाग लिया तथा श्री रामाश्रय सिंह नेताजी कार्यक्रम का नेतृत्व किया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया।

thearyasamaj.org

महाशोक

ब्रहमचारी राजसिंह जी आर्य का निधन

इस महामानव के निधन की सूचना जैसे ही प्रसारित की गयी, सम्पूर्ण आर्य जगत में शोक की लहर दौड़ गई। सारा राष्ट्र स्तब्ध रह गया। किसी को विश्वास नहीं हो रहा था, यह आर्य जगत का दुलारा, चमकता हुआ सितारा का इतना जल्दी अवसान हो जायेगा। 5 जनवरी 2015 को सुबह दिल्ली के राम मनोहर लोहिया अस्पताल में ब्रहमचारी राजसिंह जी के आकस्मिक निधन से आर्य जगत को अपूर्णिय क्षति हुई है। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना में उनके निधन की सूचना मिलते ही सभा प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी की अध्यक्षता में शोक सभा आयोजित की गई। किसी के आँखों के आँसू रोकते नहीं रूक रहे थें। फिर भी धैर्य पूर्वक इस विषम परिस्थिति में उनके कृतियों को आर्यों ने याद किया।

जिस उर्जा और उत्साह के साथ वे अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों का आयोजन और संयोजन करते थे उसे भुलाया नहीं जा सकता। वे आर्य समाज के सफल योद्धा थे जिन्होंने विपरीत परिस्थिति में भी चुनैतियों को स्वीकार कर आर्य समाज का काम किया। इनके निधन से आर्य समाज ने एक कर्मठ, निष्ठावान और सच्चा सपूत खोया है। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा उनके निधन पर महाशोक प्रकट करती है। इस अवसर पर मंत्री श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री सत्यदेव प्रसाद गुप्ता आदि उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

श्री राम नाथ सहगल आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी. ए. वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संयुक्त तत्वाधान में डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में आयोजित महात्मा हंसराज दिवस समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष दिये जाने वाले सम्मान में श्री पूनम सूरी, प्रधान डी. ए. वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा सर्वप्रथम सम्मान आर्य समाज के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री राम नाथ सहगल को आज 90 वर्ष होने पर उनके द्वारा आर्य समाज और डी. ए. वी. को दी गई सेवाओं के लिए आजीवन उपलब्धि पुरसकार (Life Time Achievement Awrd) से सम्मानित किया गया।

हम उनके स्वास्थ्य लाभ एवं दीर्घायु की कामना करते हैं ताकि वे इसी तरह समाज सेवा करते हुए हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्त्वावधान में

चम्पारण जिला आर्य महासम्मेलन

21 मार्च शनिवार से 24 मार्च मंगलवार 2015 तक

तदनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (आर्यसमाज स्थापना दिवस) से चैत्र शुक्ल 4 संवत् 2062 तक

कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ

आर्यों का महा कुम्भ

चम्पारण की सभी 150 आर्यसमाजों सम्मिलित होंगी

विद्वानों, संन्यासियों, भजनोपदेशकों, कार्यकर्त्ताओं का विशाल संगम

विराट् यज्ञ, भजन-प्रवचन, गोष्ठियाँ, विशाल साहित्य भंडारक तथा अन्य आकर्षण

भोजन एवं आवास की उत्तम व्यवस्था

विशाल शोभा यात्रा- दिनांक 21 मार्च 2015 को अपराह्न 2 बजे से निकाली जाएगी।

अतः आप सभी धर्म प्रेमी सज्जनों एवं माताओं से अनुरोध है कि इस महायज्ञ में पधार कर वेद की अमृत वाणी से अपने हृदय को तृप्त करें एवं तन-मन-धन से सहयोग कर इस कार्यक्रम को सफल बनावें।

निवेदक :-
महादेव प्र० आर्य
प्रधान, चम्पारण जिला आर्य सभा

thearyasamaj.org

आर्यसमाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है ।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।
5. सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीति-पूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये। किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व-हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये। और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

प्रेषक :
सभा-मंत्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला
पटना-८०० ००४

मुद्रित सामग्री

सेवा में,
श्री/मेसर्स........................
मो0........................
पो0........................
जिला........................
(प्रेषिती के न मिलने पर यह अंक प्रेषक को ही लौटा दें।)

स्वत्वाधिकारी, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा,, श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-4 के लिए श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता (मंत्री) द्वारा जय उमा प्रिन्टर्स, पटना द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।